शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

भारत आध्यात्मिक नेतृत्व करने में सक्षम

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

आजादी के अमृत महोत्सव में भारत को अपने स्वतंत्रता संग्राम का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है। इस समय भारत बहुत नाजुक दौर से गुजर रहा है। उसके सामने अनेक प्रकार की भीतरी और बाहरी चुनौतियां का अंबार लगा है। वैश्विक परिस्थितियों में बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है। अमेरिका पिछले बीस सालों से हमारे पड़ोसी देश अफगानिस्तान में हिंसा से शांति स्थापित करना चाहता था, परंतु उसे खाली हाथ अपने देश लौट जाना पड़ा। पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन को अफगानिस्तान में हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया है। दूसरी और रूस ने भी अफगानिस्तान की ओर कदम बढ़ाए हैं। ऐसे में भारत को अपनी भूमिका फिर से तलाशना होगी। हिंसा से हिंसा को समाप्त करने के अनेक विफल प्रयोग होने के बाद आज भी मनुष्य का विश्वास हिंसा पर जमा हुआ है। तानाशाही का मूल आधार अस्त्र-शस्त्र होता है, परंतु लोकतंत्रात्मक ढंग से चुनी हुई सरकारों के पास भी शांति स्थापना के लिए अंतिम उपाय सेना ही होती है। जनता अपने लिए सरकार चुनते समय अंततः सेना को ही अपनी सम्मति देती है। तानाशाही प्रधान देशों में भिन्न मत वाले को कोई स्थान नहीं होता। इस विचार ने अपने पैर लोकतंत्रात्मक देशों में भी पसार लिए हैं। 'मम् सत्यं के आधार से राज्यों का संचालन किया जा रहा है। दुनिया के परिप्रेक्ष्य में जब भारत की ओर दृष्टिपात करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि यहां की लोकतांत्रिक पद्धति का रूपांतरण सामंतशाही में हो गया है। यहां के जनमानस में चक्रवर्ती सम्राट के सैकड़ों किस्से रचे-बसे हैं। धर्मग्रंथों में उन राजाओं के उल्लेख हैं, जिनके राज्य में लेशमात्र भी दुःख नहीं था। पूरे राज्य में सुख, समृद्धि और खुशहाली थी। कहीं पर भी विषमता का नामोनिशान नहीं था। बहुत अधिक पुरानी बात नहीं है, जब आजादी के पहले देश मे राजशाही थी। अंग्रेजों से आजादी मिलते ही हमने लोकतंत्रात्मक पद्धति को अपनाया। एक संविधान के तहत पूरे देश की गतिविधियां संचालित की जाने लगीं। भारत का आज जैसा राजनीतिक स्वरूप दिखायी देता है, ऐसा भारत पहले कभी नहीं था। यद्यपि सांस्कृतिक दृष्टि से आसेतु हिमालय भारत हजारों वर्षों से एक रहा है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि वैचारिक भिन्नता ने भारत के अध्यात्म को बहुत ऊंचाई पर पहुंचाया। अपने से भिन्न विचार वालों का भारत ने हमेशा से स्वागत किया है। इसका प्रभाव स्वतंत्रता सेनानियों में भी दिखायी देता है। उस दौरान भिन्न-भिन्न मार्ग से आजादी के लिए प्रयत्न करने वालों का अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्ति ही था। आज कतिपय लोग राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उनके मतभेदों को 'मनभेद' तक ले जा रहे हैं। लोकतंत्र होने के बाद भी भारतीय मानस में 'एक राजा' के भाव जैसी सुप्त महात्वाकांक्षा को उभारकर अपने तुच्छ हितों को साधा जा रहा है। इस प्रवृत्ति ने

भारत के संघीय ढांचे को प्रभावित किया है। सब कुछ अपने अधीन कर लेने की अनंत इच्छाओं ने असहिष्णुता को धारण कर लिया है। भारत की प्राचीन गौरवशाली परंपरा और संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लक्ष्य को लेकर जो प्रयास किए जा रहे हैं, उनमें कितनी सफलता मिलेगी, यह तो भविष्य में पता चलेगा। लेकिन इतिहास से इतना तो पता चलता ही है कि ऐसे सारे प्रयत्न अंतिम रूप से असफल सिद्ध हुए हैं। भारत में विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता मौजूद है, परंतु उसे संकुचित राष्ट्रवाद के चौखटे में कस दिया गया है। अपने पड़ोसी देशों के प्रति कटुता का जैसा भौंडा प्रदर्शन किया जा रहा है, उससे हमारे सहिष्णुता के गुण पर ग्रहण लग गया है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें तो हमारे अथवा पड़ोसी देशों में होने वाली हिंसात्मक गतिविधियां हमारी मानसिक हिंसा का ही प्रत्यक्षीकरण हैं। वैर भाव राजनीति में प्रधान गुण माना जाता है। मन में पलने वाले वैर भाव की अंतिम परिणति हिंसा में होती है। भारत आध्यात्मिक शक्ति संपन्न देश रहा है। उसने अस्त्र-शस्त्रों से नहीं बल्कि विचारों से दुनिया को प्रभावित किया है। विज्ञान युग में राजनीति काल बाह्य हो चुकी है। उसे अपनी मूल प्रकृति की ओर लौटकर प्रश्नों का समाधान आध्यात्मिक तरीके से करना होगा, तभी वह विश्व को नेतृत्व करने में सक्षम हो पाएगा।